BA-I(H)
मैथिली

प्रो० संजीत कुमार झा
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

विद्यापतिक अवहट्ट रचना:

कीर्तिलता:

विद्यापति द्वारा लिखल गेल अछि कीर्तिलता। एहि रचनासँ पूर्व लिखैत छथि —
"बालचन्द विज्जावइ भाषा, दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा।
ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई णिच्चई नाअर मन मोहइ।।"

ई अवहट्टक गद्य-पद्यमय ग्रन्थ थिक एहिमे महाराज कीर्ति सिंहक यशोगान कयल गेल अछि। एकर रचना ऐतिहासिक काव्य परम्परामे भेल अछि। कीर्तिलता केवल तथ्य निरूपणक पुस्तक नहि प्रत्युत काव्योचित विशेषतासँ युक्त अछि। ई चरितकाव्य चारि पल्लवमे विभाजित अछि।

एहिमे अखलान नामक यमन द्वारा महराज कीर्तिक सिंहक पिता गणेश्वर रायक हत्या एवं राज्यापहरणक पश्चात् महराज कीर्ति सिंहक अग्रज वीर सिंहक संग जौनपुर जएबाक एवं ओहिठाम सुलतानक सहायतासँ अखलानकेँ युद्धमे परास्त कए पुनः राज्य प्राप्त करबाक एवं प्रतिशोध लेबाक वर्णित अछि। चरित काव्यक लक्षणक अनुसार एहिमे सज्जनक प्रशंसा खलक निन्दा एवं कथाक वर्णनक संग-संग नगर ओ युद्धक सविस्तार वर्णन कएने छथि।

विद्यापतिक कीर्तिलताक अवहट्ट साहित्यमे महत्वपूर्ण स्थान अछि। सर्वप्रथम भाषाक दृष्टिएँ एवं तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक अवस्थाक विशद चित्रणक दृष्टिएँ एकर विशेष महत्व अछि। ओहि समयमे मुसलमानी शासक जाड़ि मजबूत भए गेल छल, मुसलमान लोकनिक अत्याचार हिन्दू लोकनिक पर विशेष भए रहल छल ओहि समयमे सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक अराजकताक बड़ यथार्थ चित्रण भेल अछि।

प्रस्तुत ग्रन्थमे गद्य-पद्य दुहुक प्रयोग भेल अछि। मुदा एहिमे पद्यक

मुदा एहिमे पञ्च अभिकता अछि। एहिमे प्राकृतिक किछु छन्दक समावेश अछि। विद्यापति तत्कालीन देशीभाषा एवं प्राचीन अपभ्रंशक प्रयोग करने छथि। विद्यापति रचना मौलिक रचना कएने छथि। एहि ग्रन्थमे कविक कवित्व भावना ठाम-ठाम कए स्फुट भए उठल अछि। विशेषतः नगर वर्णनक प्रसंग कएने अछि।

11/05